# कौशल विकास के संदर्भ में उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जिले का समीक्षात्मक अध्ययन

**अमिताभ भट्ट***

**Abstract:.**

वर्तमान समयावधि में कौशल विकास मानव सभ्यता के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है इस युक्ति के बिना व्यक्ति अपने आर्थिक आधर को दृढ़ नहीं कर सकता है, प्रारब्ध से वर्तमान तक मनुष्य के कौशल में निरंतर परिवर्तन आता रहा है, आज पूर्व के कई ऐसे कौशल है जो वर्तमान में अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं। कल्याणकारी प्रशासन की अवधरणा के कारण सरकारों को भी समय के अनुसार अपनी प्रजा के हितार्थ कौशल विकास के निरन्तर प्रयास करने की आवश्यकता है जिससे प्रजा सदैव उत्पादन मूलक बनी रहे। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी उत्तराखण्ड के देहरादून जनपद में सरकार द्वारा कौशल विकास कार्यों का परीक्षण कर रहा है जिससे सरकार द्वारा चलाये जा कौशल विकास कार्यक्रमों की प्रतिशत उपयोगिता ज्ञात की जा सके तथा सरकारों को कौशल विकास की योजनाओं को और अधिक प्रभावशाली रूप में लागू करने हेतु सुझाव प्रदान करना है।

**Key Words:-** कौशल विकास, कल्याणकारी प्रशासन, दक्षता, विशिश्ट प्रविधि, पूंजी प्रेशण, मूल्यांकन, श्रम बाजार, नवाचार, विशिश्ट सचेतन, आदि।

किसी भी स्थान एवं काल विशेश में, कौशल या कुशलता या दक्षता के उचित मूल्यांकन की आवश्यकता कई कारणों से अनुभव की जाती है। विशेश रूप से प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली में लोक हितकारी या कल्याणकारी राज्यों के लिए प्रजा और नागरिकों के समग्र विकास के लिए उनमें कौशल और दक्षता के विकास के लिए एक अनिवार्य उपकरण की भाँति देखा जाता है। भारत में भी इसी मनोभाव या अनुभूति से प्रेरित होकर समय–समय पर विभिन्न सरकारों द्वारा न केवल कौशल विकास के विभिन्न उपायों का निर्माण किया गया है, अपितु कौशल और दक्षता के विकास के साथ ही उसके मूल्यांकन का भी समय–समय पर प्रयास किया गया है। आधिकारिक रूप से सरकार द्वारा विभिन्न विकास से संबंधित संस्थाओं या अभिकरणों के द्वारा इस प्रकार का मूल्यांकन किया जाता है। यह मूल्यांकन वास्तव में इस बात के प्रति लक्षित होता है कि कौशल एवं दक्षता के विकास के लिए जितनी भी योजनाएं एवं कार्यक्रम लागू किए गए हैं, उनका धरातलीय स्तर पर नागरिकों के जीवन में किसी सकारात्मक विकास के लिए कितना परिणाम प्राप्त करने में सक्षम है?

इस प्रकार का मूल्यांकन किसी भी राज्य एवं देश की अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखकर भी किया जाता है। साथ ही इसे और अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए व्यक्तियों में कौशल या दक्षता के विकास हेतु विशेश प्रकार की प्रणालियों एवं प्रविधियों का इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह का मूल्यांकन प्रायः विशेश महत्वपूर्ण होता है, जिसके द्वारा अभी तक लागू

शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग बी0एस0एम0 (पी0जी0) कॉलेज, रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड